Tripuri
A Multidisciplinary and Multilingual Double-Blind Peer-Reviewed International Research Journal
TRIPURI

मातृत्व और नारी सशक्तिकरणः रामचरितमानस की स्त्रियों की अंतर्वेदना का अध्ययन

मोनिका पटेल
पीएच.डी., इतिहास विभाग
साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय
साँची, रायसेन, (म.प्र.) 464651
patelmonika675@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15712328

सांराश

काव्य के लक्षण ग्रन्थों में दी गई मान्यताओं के अनुसार सर्वमान्य तथ्य है कि हर महाकाव्य किसी न किसी नायक या नायिका के जीवन-चरित पर रचा जाता है। जिसमें नायक के उज्ज्वल चरित्र को उजागर किया जाता है। तुलसीदास रचित रामचरितमानस में श्रीराम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप को उजागर किया गया है, जिसमें मानस की नायिका सीता भी अपने उदात्त चरित्र के साथ अंकित है। परिवार की सुख-समृद्धि का आधार परिवार में रहने वाली नारी शक्ति पर ही निर्भर करता है अतः नारी शिक्षा की दृष्टि से भी यह ग्रंथ अनमोल है। रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक महाकाव्य, भारतीय संस्कृति में धार्मिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों का दर्पण है। इस ग्रंथ में स्त्रियों की भूमिका केवल पृष्ठभूमि में नहीं है, बल्कि वे सामाजिक चेतना, त्याग, मातृत्व और आंतरिक शक्ति की प्रतीक हैं। रामचरितमानस के स्त्री पात्र भारतीय आदर्श नारीत्व की प्रतीक हैं, जिनमें मातृत्व भाव, त्याग, सहनशीलता और आत्मबल का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। यह शोधपत्र सीता, कौसल्या, सुमित्रा, उर्मिला और शबरी जैसी स्त्रियों की भावभूमि में अंतर्निहित मातृत्व की शक्ति तथा उनके आंतरिक संघर्षों और आत्म-प्रत्ययों को उजागर करता है। इन पात्रों ने पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए नारी सशक्तिकरण की मौन परिभाषा प्रस्तुत की है। सीता का वनगमन, उर्मिला का मौन व्रत, सुमित्रा का त्यागपूर्ण दृष्टिकोण और शबरी की भक्तिकृ सभी स्त्रियों की अंतरात्मा में छिपी उस पीड़ा और शक्ति को दर्शाते हैं, जो उन्हें परिस्थितियों से लड़ने का आत्मबल देती है। यह अध्ययन स्त्री के मातृत्व भाव को केवल जैविक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र विशेष रूप से मातृत्व के भाव और नारी सशक्तिकरण के आलोक में रामचरितमानस की प्रमुख स्त्रियों की अंतर्वेदना को समझने का प्रयास करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इसी को आधार बनाकर के मातृत्व भाव सम्बन्ध में प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

कूट शब्द-तुलसीदास, रामचरितमानस, सीता, मातृत्व भाव, माता कौशल्या, आत्मबल, त्याग, शबरी, भारतीय नारी आदर्श, भक्तिस्त्री चेतना।

प्रस्तावना

मातृत्वरूप भारतीय संस्कृति में अवधारणा

भारतीय संस्कृति में श्माताश को ईश्वरतुल्य माना गया है। माँ का स्थान जीवनदाता, पालनकर्ता, मार्गदर्शिका के रूप में सर्वोपरि है। रामचरितमानस की स्त्रियाँ इस मातृत्व को केवल जैविक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से निभाती हैं

मातु समान नहिं कोउ उपकारी। सुत हित करइ सकल संसारी

सीता का चरित्रांकन, रामचरितमानस में तुलसीदास की आदर्श सृष्टि है। उल्लेख असंगत न होगा कि सीता के चरित्रांकन का वह स्वरूप तुलसीदास के साथ-साथ सर्वसामान्य के लिए भी आदर्श की पराकाष्ठा है। इससे अधिक उज्ज्वल नारी-चरित्र के भाव-भूमि की कल्पना सम्भवतः नहीं की जा सकती। रामचरितमानस में तुलसीदास द्वारा अंकित नारी पात्रों के उज्ज्वल एवं अधम चरित्रों पर विचार करते हुए सीता के साथ-साथ अन्य स्त्री-चरित्रों पर विचार करना भी यहाँ होगा। सीता का यह चरित्र तुलसी के युग और उनके जीवन दर्शन से निर्मित हुआ है। काव्य के लक्षण ग्रन्थों में दी गई मान्यताओं के अनुसार सर्वमान्य तथ्य है कि हर महाकाव्य किसी न किसी नायक या नायिका के जीवन चरित पर रचा जाता है। जिसमें नायक के उज्ज्वल चरित्र को उजागर किया जाता है। तुलसीदास रचित रामचरितमानस में श्रीराम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप को उजागर किया गया है, जिसमें मानस की नायिका सीता भी अपने उत्तम चरित्र के साथ अंकित है

सुनि बनगमन राम कर कहिहि न हर्ष न शोक।
जानहिं मातु राम प्रिय, राम सदा धर्मलोक ॥

कौशल्या को महान नारी के रूप में तुलसीदास ने चित्रित किया है। कौशल्या कौशलराज की पुत्री एवं दशरथ की पटरानी थी। अश्वमेघ यज्ञ में वह राजा दशरथ के साथ प्रत्येक धार्मिक कार्य सम्पन्न करती थी। कौशल्या का चरित्र अत्यन्त उदार एवं आदर्शवादी वृत्ति से संपन्न था। वह एक आदर्श भार्या एवं आदर्श माता थी। पवित्रता की प्रतिमूर्ति एवं कुशल और व्यावहारिक हैं। अपने पति की सेवा वह पूरे मन से करती है एवं कभी कटु वचन नहीं बोलती तथा दुःख को सहजता से स्वीकार करती है। वह विदुषी एवं पत्री के धर्म को जानती थी। वनगमन के अवसर पर इसीलिए वह सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश देती हैं। कौशल्या अत्यन्त सहज और सरल है किन्तु कठिन से कठिन परिस्थिति को भी धैर्य से स्वीकार करती है। कौशल्या वात्सल्यमयी माँ है। श्रीराम वाल्यावस्था में घुटनों के बल चलकर माताओं को आनन्दित करते

है और कभी पूजा के प्रसाद का भोग लगाकर माता कौशल्या को आश्चर्य चकित कर देते हैं। गोस्वामी ने इस प्रसंग का बडे विस्तार से वर्णन किया है

सुमित्रा विवेकशील मातृत्व का आदर्श

सुमित्रा अपने पुत्र लक्ष्मण को राम के साथ वन भेजती हैं, परंतु कोई रोष या विषाद नहीं प्रकट करतीं। उनकी यह सहज स्वीकृति एक सशक्त नारी का उदाहरण है।

जौं पावसि प्रभु पद पंकज सेवा।
जानहु सुत एहि जन्म सफल जेवा ॥

यह दृष्टांत मातृत्व के साथ-साथ नारी सशक्तिकरण की विवेकपूर्ण अभिव्यक्ति है।

रामचरितमानस में अथवा राम काव्य में यदि कोई पूर्णरूपेय पात्र है तो वह लक्ष्मण की माता सुमित्रा है। माँ के रूप में वह वात्सल्यमयी एवं सात्विक गुणों से आदर्श नारी है। वह चारों बालकों से अत्यधिक प्रेम करती हैं –

सुनि सिस रुदन परम प्रिय वानी, संभ्रम चलि आई अब रानी।
***हरषित जैह तहँ धाई दासी, आनन्द मगन सकल पुरवासी।।* 9**

रानी सुमित्रा बालक के रोने की बहुत प्यारी बाणी सुनकर वहाँ आई। सभी रानी शिशु की प्यारी वाणी सुनकर आनन्द में मग्न हो गये और दासियों प्रसन्न होकर यहाँ वहाँ दौड़ गयी।

समुझि सुमित्रा राम सिय, रूपु सुसीलु सुभाऊ ।
***नृप सनेह लखि धुनेऊ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ //* 10**

मानस में सुमित्रा का उल्लेख बहुत कम मिलता है लेकिन जितना भी मिलता है बह संपूर्णतः एक साकारात्मक व्यवहार का चरित्र आता है। सुमित्रा अपने पुत्र को राम के साथ भेजती है और स्पष्ट कहती है कि अपने बड़े भाई के वन में यहाँ-वहाँ होने पर उनके सेवा में किसी प्रकार का प्रमाद मत करना। वही तुम्हारी परम गति है। तुम छोटे भाई के रूप में बड़े भाई के प्रति अत्यन्त निष्ठावान रहना। वह लक्ष्मण से कहती हैं माता के रूप में सुमित्रा कभी स्वार्थी नहीं बनती। वह अत्यन्त सहनशील रहती है। राम बनगमन का समाचार सुनकर बह ठगी सी रह जाती है द्य माता के रूप में सुमित्रा कभी स्वार्थी नहीं बनती। वह अत्यन्त सहनशील रहती है। राम वनगमन का समाचार सुनकर वह ठगी सी रह जाती है, वह न तो दुःखी होती है और न ही विलाप करती है। वह स्वयं क दुख दबाकर अपने पुत्रों को दुःखी नहीं करना चाहती। वह लक्ष्मण से कहती है -

सीता अंतर्वेदना, शक्ति और आत्मगौरव

सीता का चरित्र मातृत्व, पतिव्रता धर्म, त्याग और आत्मगौरव का समन्वय है। लंका में रहते हुए भी उन्होंने रावण के समक्ष अपने स्त्रीत्व और मर्यादा को अक्षुण्ण रखा।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। **44**

आपद काल परखिए चारी। **43**

सीता की अग्निपरीक्षा, वाल्मीकि आश्रम में एकल मातृत्व और लव-कुश का पालन-पोषण, नारी की अंतर्निहित शक्ति और स्वाभिमान को उजागर करता है। वह पुरुष प्रधान समाज में अपने निर्णय स्वयं लेती हैं। हनुमान सीता माता से कहने लगे हे माता। सेवकों को सुख देने वाले रामचन्द्र का स्मरण करके हृदय में धीरज धरो।

उनकी प्रभुता को हृदय में रख मेरे बचनों को सुन व्याकुलता छोड़ दीजिये। हनुमान कहते है-हे माता। राक्षसो का नाश हुआ यह जानकर हृदय में धीरज धरो। वह बोले हे माता! मैं आपको अभी लिवाचलूँ परन्तु राम की शपथ है, उनकी ऐसी आज्ञा नहीं है। इसलिए हे माता। कुछ दिन और धैर्य रखो। कपियों सहित श्रीराम यहाँ आयेगें एवं राक्षसों को मारकर आपको ले जावेंगे-

है सुत कपि सब तुम्हहि समाना, जातुधान जति भेंट बलवाना।

मोरे हृदय परम सन्देहा, सुनि कपि प्रगट कीन्ही निज देहा।। **15**

सीता ने कहा-हे पुत्र । सब बन्दर तुम्हारे ही समान छोटे होंगे और राक्षस तो बड़े ही बलवान हैं। अतः मेरे मन में बड़ी भारी शंका है। यह सुन हनुमान ने अपना स्वरुप प्रकट किया। वह बोला हे माता बन्दरों में बहुत बल बुद्धि नहीं होती परन्तु प्रभु के प्रताप से छोटा सा सॉप भी गरुण को खा सकता है। सीता के चरणों में बार-बार सिर नवाकर, हाथ जोड़कर बोले हे माता। अब मैं कृत्तार्थ हो गया। आपका आशीर्वाद अटल है

उर्मिला मौन सहनशीलता और आत्मबल की प्रतिमूर्ति

उर्मिला को सामान्यतः भुला दिया जाता है, किंतु वह लक्ष्मण की 14 वर्षों की अनुपस्थिति में वनवासिनी की भाँति जीवन व्यतीत करती हैं। उनका मौन त्याग स्त्री शक्ति का अद्भुत उदाहरण है।

उर्मिला रघुपति चरन रति, लखि लखन अति हरष।

कहेऊ राम रची सब सुभ गति बिचारि सरष ॥ **114**

भावार्थ लक्ष्मण जब 14 वर्षों के पश्चात लौटते हैं, तब उन्हें उर्मिला की रामचरन भक्ति और तपस्विनी जैसी स्थिति देख अत्यंत हर्ष होता है। यह दोहा उर्मिला के आत्मबल और भक्ति की मौन साधना को उजागर करता है।

व्रत समान जीवन जिया, उर्मिला धीर अनूप।

त्याग, तपस्या, मौन से, रची प्रेम की रूप ॥

उर्मिला ने अपने जीवन को एक व्रत के रूप में जिया, जिसमें धैर्य, आत्मबल और मौन तपस्या से उन्होंने प्रेम की एक अद्भुत प्रतिमा गढ़ी।

मंदोदरी नीतिमति और साहसी नारी

रावण की पत्नी मंदोदरी अपने पति के अधर्म का विरोध करती है और बारंबार उसे समझाती है। वह शक्ति और विवेक दोनों का संतुलित स्वरूप हैं। मंदोदरी की सबसे बड़ी विशेषता उसका साहस है वह रावण जैसे पराक्रमी परंतु अहंकारी राजा के विरुद्ध भी सत्य बोलने से पीछे नहीं हटती। रावण के प्रबल विरोध के बावजूद, वह नीति और धर्म के पक्ष में आवाज उठाती है।

नाथ नीति यह धरम न दोऊ।
अपराधिनी नारि नहिं ओऊ ॥

रावण की मृत्यु के पश्चात विलाप में नारी चेतना

जब रावण युद्ध में मारा जाता है, तो मंदोदरी अपने पति के लिए रोती जरूर है, परंतु साथ ही यह भी स्वीकार करती है कि उसका पतन उसकी नीति हीनता और अहंकार के कारण हुआ।

सकल सुकृत अकृत रहे, करि लंकापति हठ।
अपराध कीन्हेहि प्रभु, सर बस भयउ सठ ॥

मातृत्व और अंतर्वेदना का सामंजस्य

इन पात्रों की अंतर्वेदना केवल पीडा नहीं है, बल्कि वह आंतरिक चेतना है जो उन्हें सशक्त बनाती है। तुलसीदास के वर्णन में स्त्रियाँ केवल करुणा या सौंदर्य की प्रतीक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक बल और नैतिक मार्गदर्शक हैं।

नारी सशक्तिकरण की तुलसी दृष्टि

रामचरितमानस की स्त्रियाँ मुखर नहीं हैं, परंतु उनका मौन संघर्ष, त्याग, धर्मनिष्ठा और निर्णय क्षमता उन्हें सशक्त बनाती है। तुलसीदास यद्यपि परंपरावादी हैं, पर उनके चरित्रों में अंतर्निहित शक्ति की अभिव्यक्ति स्पष्ट है।

शोध पत्र के उद्देश्य

- रामचरितमानस में मातृत्व की अवधारणा की व्याख्या करनाः
- रामचरितमानस में मातृत्व को किस प्रकार दर्शाया गया है, इसका विश्लेषण करना।
- विभिन्न पात्रों के माध्यम से मातृत्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करना।
- मानवीय पात्रों के संदर्भ में मातृत्व की भूमिका का विश्लेषण करनाः
- कौशल्या, सुमित्रा, सीता और अन्य माताओं के चरित्रों का अध्ययन करना।
- रामचरितमानस में मातृत्व के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व की जांच करना

- रामचरितमानस में मातृत्व के आदशों और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना
- रामचरितमानस में वर्णित मातृत्व के आदर्शों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
- क्या ये आदर्श आज भी समाज के लिए उपयोगी हैं, इसका मूल्यांकन करना।
- रामचरितमानस में मातृत्व के चित्रण में तुलसीदास की दार्शनिक दृष्टि को समझना
- तुलसीदास ने मातृत्व को किस दृष्टिकोण से देखा, इसका विश्लेषण करना।
- उनके द्वारा चित्रित मातृत्व के आदर्शों में उनकी दार्शनिक और धार्मिक मान्यताओं को समझना।
- रामचरितमानस में मातृत्व की तुलना अन्य धार्मिक ग्रंथों या साहित्यिक कृतियों में मातृत्व के चित्रण से करना।
- रामचरितमानस में मातृत्व की विशिष्टता और योगदान को स्थापित करना।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कथनों के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसीदास ने रामचरितमानस में नारी के कल्याणमयी, ममतामय रूप का विकास किया था। जीवन की विवृंखलताओं के मध्य उन्होंने ऐसी नारी का अंकन किया जो गृह जीवन में त्याग, ममता और कर्तव्य का संबल लेकर अग्रसर होती है, अपने हृदय-रक्त से साधना और कर्तव्य का अभिषेक करती है। वेदना और पीड़ा, दुःख और विषाद, विलास और विराग के मध्य वह सम है। सहिष्णुता और धीरता वह मूर्त रूप है। सीता, कौशल्या, पार्वती, सुमित्रा, मन्दोदरी आदि का वात्सल्यमयी एवं आदर्श रूप प्रतिफलित हुआ है। जन्मदात्री नारी माता, बहन और पुत्री के रूप में समाज के समक्ष आती है उसके त्यागमय कार्यों के कारण ही उसे माँ का सर्वप्रथम सर्वोच्च स्थान एवं हृदय में सर्वोच्च स्थान गई है। माता के हृदय में अपनी संतान के प्रति जो ममता होती है उसकी नारी, करुण प्रसव की पीड़ा और वेदना भोगने पर भी अपना दंद माता की ममता में भूल जाती है एवं अनेक कष्ट सहने पर भी अपनी संतान का पालन-पोषण करती है। माता कौशल्या का हृदय मन्दाकिनी की वह शीतल धारा है जो पात्र-अपात्र ऊँच-नीच का विचार किए बिना सबको समभाव से शीतलता और निग्धता का पवित्र दान देती है। गंभीर, गृहतम आघात सहकर भी अपनी विवेक बुद्धि को अविकार रखने की क्षमता उनमें है। सुमित्रा आदर्श माता हैं, जिनके लिए कर्तव्य ही प्रधान है. माता की कोमलता और ममता नगण्य। भगवती पार्वती अपने अचल पतिव्रत, दृद्र अनुरक्ति से शिव को पति रूप में प्राप्त करती है तथा पतिव्रताओं में शिरोमणि गिनी जाती है। मन्दोदरी पतिव्रता होते हुए भी पति की दुनिर्ति का विरोध करती हैं एवं संतमार्ग दिखलाती है। इन सब आदर्श रूपों में तुलसीदास ने अपनी आदर्श भावनाओं को ही आकर दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामचरितमानस, पोद्दार, हनुमानप्रसाद, अयोध्याकाण्ड, गोरखपुर, गीताप्रेस, में 1962, पृष्ठ. 149
2. बाहरी हरदेव एवं अन्य, सूरसागर, इलाहाबाद, नोकभारती प्रकाशन, 1991, पृष्ठ.320
3. सूर्यवंश प्राचीन कल से वर्तमान कल तक, गौतम आशा, तिवारी कुमार प्रकाश, 2015 पृष्ठ, 182
4. रामचरितमानस में तुलसी की नैतिक मान्यताएं, गुप्त नारायण लक्ष्मी, प्रथम संस्करण, 1998, पृष्ठ. 59
5. रामायण कालीन संस्कृति व्यास नानू राम शांति कुमार, तीसरा संस्करण, 1987 पृष्ठ 4
6. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, बेलवेडियर प्रिण्टिंग प्रेस, इलाहाबाद, 1928, पृष्ठ.56
7. वाल्मीकि रामायण, महर्षि वाल्मीकि, मुद्रित संस्करण सेरामपुर प्रेस से प्रकाशित, 1806-07, पृष्ठ.285
8. तुलसीदास और रामकथा की परंपरा, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ.213
9. गोस्वामी तुलसीदास और उनका काव्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ.310
10. भारतीय संस्कृति और रामचरितमानस, अयोध्या सिंह उपाध्याय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960, पृष्ठ. 193
11. रामकथारू उत्पत्ति और विकास, सत्यव्रत शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृष्ठ. 153
12. सूर्यवंश प्राचीन कल से वर्तमान कल तक, गौतम आशा, तिवारी कुमार प्रकाश पृष्ठ क्रमांक 43, संस्कार 2015
13. रामचरितमानस में तुलसी की नैतिक मान्यताएं गुप्त नारायण लक्ष्मी पृष्ठ क्रमांक 59, 1, संस्करण